1 कुरिन्थियों अध्याय 2 और 3
रविवार, 08 सितम्बर 2019

<u>अध्याय दो</u>

हम अध्याय दो को निम्नलिखित शास्त्र खंडों में विभाजित करते हैं:
शक्ति के साथ यीशु का प्रचार (2:1-5)
आत्मा परमेश्वर की बुद्धि को प्रकट करता है (2:6-10)
आत्मा हमें वह सब प्रकट करता है जो परमेश्वर ने हमें दिया है (2:11,12)
आत्मा हमें मसीह की बुद्धि प्रदान करता है (2:13-16)

अध्याय एक में, प्रेरित पौलुस ने सुसमाचार में, अर्थात् मसीह के क्रूस के संदेश में, परमेश्वर की सामर्थ्य और बुद्धि पर बल दिया। वह इसी बल को आगे बढ़ाते हुए यह दर्शाता है कि उसने क्रूस के संदेश का प्रचार पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के प्रत्यक्ष प्रमाण के साथ किया।

शक्ति के साथ यीशु का प्रचार (2:1-5)

1 हे भाइयो, जब मैं परमेश्वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया, तो शब्दों या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया।
2 क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूँ।
3 मैं निर्बलता और भय के साथ, और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा;
4 और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था,
5 इसलिये कि तुम्हारा विश्‍वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्‍वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो।

- ### वचन 1:

हे भाइयो, जब मैं परमेश्‍वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया, तो शब्दों या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया।

जैसा कि हमने पहले अध्याय एक में देखा, "परमेश्वर की गवाही" का अभिप्राय यीशु मसीह के सुसमाचार के संदेश से है। पौलुस फिर से इस बात पर बल देता है कि उसने सुसमाचार का प्रचार महान वाक्-कौशल, उत्तम शब्दों या मानवीय बुद्धि पर निर्भर होकर नहीं किया—*"यूनानी वक्ता के समान ऊँचे शब्दों या दर्शनशास्त्र के साथ नहीं"* (एम्प्लीफाइड बाइबल)।

- ### वचन 2:

क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूँ।

कुरिन्थ में सेवा करते समय, प्रेरित पौलुस ने जानबूझकर महान दर्शनिक चर्चाओं और अन्य विषयों में उलझने से अपने आप को दूर रखा, और केवल यीशु मसीह और उसके क्रूस के कार्य को प्रस्तुत करने पर केंद्रित रहा।

पौलुस एक अत्यंत शिक्षित व्यक्ति था और वह आसानी से गहरे दर्शनिक और धर्मशास्त्रीय वाद-विवादों में भाग ले सकता था। फिर भी, उसने अपना ध्यान क्रूस के संदेश पर ही केंद्रित रखने का चुनाव किया।

लूका यह दर्ज करता है कि पौलुस कुरिन्थ में यहूदियों और यूनानियों के साथ तर्क-वितर्क करता था। परन्तु यह तर्क-वितर्क यीशु मसीह पर ही केंद्रित था।

प्रेरितों के काम 18:4,5
4 वह हर एक सब्त के दिन आराधनालय में वाद–विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था।
5 जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए, तो पौलुस वचन सुनाने की धुन में यहूदियों को गवाही देने लगा कि यीशु ही मसीह है।

यहाँ एक महत्वपूर्ण शिक्षा है। अक्सर, मसीह को साझा करते समय, हम निरर्थक वाद-विवादों, चर्चाओं और व्यक्तिगत मतों में उलझ सकते हैं, जिनका कोई वास्तविक परिणाम नहीं होता। हमें ऐसी भटकनों से बचना चाहिए और मसीह के संदेश को प्रस्तुत करने पर ही टिके रहना चाहिए।

इसी प्रकार, पौलुस ने तीमुथियुस को अपनी पत्री में यह सलाह दी कि वह *"कहानियों और अनन्त वंशावलियों"* में न उलझे (1 तीमुथियुस 1:4) और *"जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, उसके अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से परे रह"* (1 तीमुथियुस 6:20,21)।

- ## वचन 3:

मैं निर्बलता और भय के साथ, और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा;

कुरिन्थ में यहूदी बहुत विरोधी थे। लूका लिखता है कि *"उन्होंने उसका विरोध किया और निन्दा की"* (प्रेरितों के काम 18:6)। इसलिए पौलुस आराधनालय को छोड़कर बगल के एक घर में गया, जो यूसतुस नामक व्यक्ति का था, और वहाँ प्रचार करने लगा (प्रेरितों के काम 18:6,7)। *"और बहुत से कुरिन्थवासी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया"* (प्रेरितों के काम 18:8)। इन सब बातों के कारण पौलुस के जीवन के लिए भी खतरे रहे होंगे, और जो कुछ हो रहा था, उसी के कारण वह, जैसा कि वह वचन 3 में कहता है, *"निर्बलता और भय के साथ, और बहुत थरथराता हुआ"* था।

इस समय प्रभु यीशु पौलुस को दिखाई दिए:

प्रेरितों के काम 18:9,10
9 प्रभु ने एक रात दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, "मत डर, वरन् कहे जा और चुप मत रह;
10 क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।"

- ## वचन 4,5:

4 और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था,
5 इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो।

पौलुस इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि उसका प्रचार मानवीय बुद्धि का प्रदर्शन नहीं था, जैसे कि महान वाक्-कौशल, वक्तृत्व कला या दर्शनशास्त्र, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य के प्रत्यक्ष प्रमाण में

था। "लुभानेवाली" शब्द का अर्थ "फुसलाने वाली" भी होता है। उसने लोगों को मानवीय बुद्धि के द्वारा यीशु मसीह की ओर आकर्षित करने का प्रयास नहीं किया।

यह सेवकाई का एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू है। यद्यपि हमें अपने प्रचार और शिक्षण में सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिए, फिर भी हमें मानवीय भावनाओं, मनोरंजन, चतुर विपणन, प्रेरणात्मक भाषण, या मानवीय व्यक्तित्व अथवा करिश्मे पर निर्भर रहने से बचना चाहिए। हमारा भरोसा पवित्र आत्मा और उसकी सामर्थ्य के प्रकट कार्यों पर होना चाहिए, जो जीवनों को प्रभावित करते हैं।

अक्सर कहा जाता है: "जिससे तुम लोगों को आकर्षित करते हो, उसी की ओर तुम उन्हें ले जाते हो।" हम नहीं चाहते कि लोग मानवीय बुद्धि, भावनाओं, मनोरंजन, बढ़ा-चढ़ाकर किए गए प्रचार आदि पर आकर्षित हों और अपने जीवन की नींव उन्हीं पर रखें।

हमारा लक्ष्य यह है कि लोगों का विश्वास परमेश्वर की सामर्थ्य में स्थिर हो।

एक कलीसियाई समुदाय के रूप में, हमें यही खोज करनी चाहिए—पवित्र आत्मा की सामर्थ्य का प्रकट होना। चाहे हम सड़कों पर हों, छोटे समूहों में एकत्रित हों, मॉल में हों, या कलीसिया की सभाओं में, हमें यह इच्छा रखनी चाहिए कि जब हम मसीह के क्रूस का संदेश साझा करें, तब पवित्र आत्मा की सामर्थ्य प्रकट हो।

आत्मा परमेश्वर की बुद्धि को प्रकट करता है (2:6-10)

6 फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान सुनाते हैं, परन्तु इस संसार का और इस संसार के नाश होनेवाले हाकिमों का ज्ञान नहीं;
7 परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया।
8 जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि वे जानते तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते।
9 परन्तु जैसा लिखा है, "जो बातें आँख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।"
10 परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जाँचता है।

- **वचन 6-7:**

6 फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान सुनाते हैं, परन्तु इस संसार का और इस संसार के नाश होनेवाले हाकिमों का ज्ञान नहीं;
7 परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया।

हम उन लोगों के साथ बुद्धि की बातें करते हैं जो परिपक्व हैं, अर्थात् जो परमेश्वर के भेदों को संभालने में सक्षम हैं। यह मानवीय बुद्धि नहीं है—न वह जिसे यह संसार बुद्धि मानता है, और न ही वह बुद्धि जिसमें इस संसार के हाकिम (मुख्य, उच्च पदस्थ) लोग संलग्न रहते हैं। यह सांसारिक बुद्धि है, जिसके विषय में जैसा कि पौलुस ने अध्याय एक में कहा, कि वह हमें परमेश्वर को जानने में सहायता नहीं कर सकती (1:21)।

जिस बुद्धि में हम संलग्न हैं, वह पहले एक भेद (रहस्य) थी और छिपी हुई (गुप्त रखी गई, छुपाकर रखी गई) थी। परमेश्वर ने युगों से पहले (जगत की उत्पत्ति से पहले) यह ठहराया था कि इस समय इस

भेद को प्रकट करे, *"हमारी महिमा के लिए"* या *"हमें अपनी उपस्थिति की महिमा में उठाने के लिए"* (एम्प्लीफाइड बाइबल, क्लासिक एडिशन अंग्रेजी बाइबल)।

जैसा कि पौलुस इफिसियों 3:3-6 में लिखता है, जो भेद प्रकट किया गया है वह सुसमाचार है—यीशु मसीह का शुभ समाचार—और यह कि अन्यजाति भी सहवारिस हों और यीशु मसीह के द्वारा वह सब कुछ प्राप्त करें जो परमेश्वर देता है।

एक अतिरिक्त टिप्पणी के रूप में, पवित्रशास्त्र कई बातों को बताता है जिन्हें परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति से पहले ठहराया था:

- अपने लोगों के लिए तैयार किया गया राज्य (मत्ती 25:34)
- एक निश्चित समय पर मसीह के सुसमाचार के भेद को प्रकट करना (1 कुरिन्थियों 2:7; इफिसियों 3:3-6; मत्ती 13:35)
- विश्वासियों को पहले से जानना, ठहराना, बुलाना, धर्मी ठहराना, और महिमा देना (रोमियों 8:29,30)
- विश्वासियों को मसीह में चुनना (इफिसियों 1:4)
- भले काम जिनमें हमें चलना है (इफिसियों 2:10)
- सारी सृष्टि का कार्य पूरा होना (इब्रानियों 4:3)
- परमेश्वर का मेम्ना बलिदान किया जाना (1 पतरस 1:19,20; प्रकाशितवाक्य 13:8)
- मेम्ने की जीवन की पुस्तक (प्रकाशितवाक्य 17:8)

• वचन 8:

जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि वे जानते तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते।

इस संसार के किसी भी प्रधान (उच्च पदस्थ) व्यक्ति ने इस बुद्धि को नहीं जाना। यह उनसे एक भेद (रहस्य) के रूप में छिपी रही। यदि वे इस भेद को जानते, तो वे परमेश्वर की योजनाओं को रोकने (या बाधा डालने) के प्रयास में, यीशु मसीह को क्रूस पर न चढ़ाते। वे नहीं चाहते कि परमेश्वर की अद्भुत उद्धार की योजना उपलब्ध हो।

...इस संसार के हाकिम...
यहाँ दोहरा संदर्भ हो सकता है—मनुष्यों की ओर भी और दुष्ट आत्मिक शक्तियों की ओर भी। पौलुस "हाकिमों" शब्द का प्रयोग दुष्ट आत्मिक शक्तियों के लिए भी करता है (जैसे इफिसियों 6:12 में "प्रधानताओं" के लिए; मूल यूनानी शब्द वही है)।

...महिमा का प्रभु।
प्रभु—यूनानी शब्द *'kurios' 'कुरिओस'*—जिसका अर्थ है सर्वोच्च अधिकार वाला, स्वामी, मालिक, प्रभुत्व रखने वाला, किसी वस्तु का स्वामी और उसका प्रबंधक।

यीशु मसीह महिमा का प्रभु है—यह उपाधि स्वयं परमेश्वर को दी जाती है।

• वचन 9:

परन्तु जैसा लिखा है, <u>"जो बातें आँख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।"</u>

पौलुस यहाँ यशायाह 64:4 का संदर्भ देता है (सीधे उद्धरण के रूप में नहीं): *"क्योंकि प्राचीनकाल ही से तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा गया और न कान से उसकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट जोहने वालों के लिये काम करे।"*

परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए महान भेद (छिपे हुए रहस्य) तैयार किए हैं।

आइए इसे अपने लिए घोषित करें: "जो आँखों ने नहीं देखा, जो कानों ने नहीं सुना, और जिसकी कल्पना मनुष्य ने नहीं की, ऐसी बातें परमेश्वर ने मेरे लिए तैयार की हैं, क्योंकि मैं उससे प्रेम करता हूँ।"

- **वचन 10:**

परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जाँचता है।

परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा इन भेदों को हमें प्रकट करते हैं (उघाड़ते हैं, आवरण हटाते हैं, प्रकाशित करते हैं)। यह कितना अद्‌भुत विशेषाधिकार है! परमेश्वर का आत्मा स्वयं परमेश्वर है। वह सब बातें जानता है, यहाँ तक कि परमेश्वर की गूढ़ बातें भी। और वह इन्हें हमें प्रकट करता है।

विश्वासियों के रूप में, हम प्रार्थना कर सकते हैं और परमेश्वर से यह माँग सकते हैं कि वह वे अद्‌भुत बातें हमें प्रकट करे, जिन्हें उसने हमारे लिए ठहराया है।

आइए हम मिलकर यह प्रार्थना करें: "प्रिय पिता, अपनी आत्मा के द्वारा मुझपर उन बातों को प्रकट करें जो आपने मेरे लिए तैयार की हैं। अपनी आत्मा के द्वारा अपनी योजनाओं और उद्देश्यों का प्रकाशन मुझे प्राप्त करने में मेरी सहायता करें।"

आत्मा हमें वह सब प्रकट करता है जो परमेश्वर ने हमें दिया है (2:11,12)

11 मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।
12 परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।

मनुष्य के भीतर की आत्मा ही वास्तव में मनुष्य के विचारों और उद्देश्यों को जानती है। आप (आपकी आत्मा) जानती है कि आप वास्तव में कौन हैं। इसी प्रकार, परमेश्वर की बातें परमेश्वर का आत्मा ही जानता है।

विश्वासियों के रूप में, हमने परमेश्वर का आत्मा पाया है। वह हम में वास करता है! और हमारे भीतर उनके होने का एक उद्देश्य यह है कि हम उन बातों को जान सकें (अनुभव कर सकें, जागरूक हों, समझ सकें) जो परमेश्वर ने हमें निःशुल्क प्रदान की हैं।

आइए इस सत्य को मिलकर घोषित करें: "मैंने परमेश्वर का आत्मा इसलिए पाया है, ताकि मैं उन बातों को जान सकूँ जो परमेश्वर ने मुझे निःशुल्क प्रदान की हैं।"

आत्मा हमें मसीह की बुद्धि प्रदान करता है (2:13-16)

13 जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं।
14 परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।
15 आत्मिक जन सब कुछ जाँचता है, परन्तु वह आप किसी से जाँचा नहीं जाता।
16 "क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखाए?" परन्तु हम में मसीह का मन है।

- ### वचन 13:

जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं।

हमें परमेश्वर की बुद्धि तक पहुँच प्राप्त है। परमेश्वर के भेद (रहस्य) उसके आत्मा के द्वारा हमें प्रकट किए जाते हैं। हम आत्मिक सत्य को उन शब्दों के द्वारा व्यक्त करते हैं, जिनका उपयोग करने के लिए पवित्र आत्मा हमें मार्गदर्शन देता है। पवित्र आत्मा ही वह हैं जो हमें परमेश्वर की बुद्धि को बाँटने, स्थानांतरित करने और संप्रेषित करने की सामर्थ्य देते हैं।

- ### वचन 14:

परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।

"शारीरिक"—यूनानी शब्द '*psuchikos*' – '*सुखिकोस*', जिसका प्रयोग प्राणिक या इन्द्रिय-प्रधान जीवन के लिए किया गया है, जो इच्छाओं और वासनाओं के अधीन होता है।

"मनुष्य"—यूनानी शब्द '*anthropos*'-'*ऐंथ्रोपोस*', जिसका अर्थ है मानव प्राणी (लिंग-विशेष से रहित)।

शारीरिक मनुष्य से तात्पर्य उस इंद्रियों द्वारा संचालित व्यक्ति से है, जो केवल अपनी प्राकृतिक इंद्रियों के आधार पर जीवन जीता है और जिसे परमेश्वर की बातों की ओर कोई झुकाव नहीं होता। ऐसा व्यक्ति परमेश्वर के आत्मा की बातों के लिए खुला नहीं होता, और उन्हें ग्रहण नहीं करता। परमेश्वर के भेद और रहस्य उसे मूर्खता (अतार्किक, असंगत) प्रतीत होते हैं। और वह उन्हें जान नहीं सकता, न समझ सकता है, क्योंकि ये सत्य पवित्र आत्मा की सहायता से ही परखे, जाँचे और समझे जाते हैं।

- ### वचन 15:

आत्मिक जन सब कुछ जाँचता है, परन्तु वह आप किसी से जाँचा नहीं जाता।

परन्तु जो व्यक्ति आत्मिक है, अर्थात् जो पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से संचालित है, वह सब बातों को परखने, जाँचने और विचार करने में सक्षम है, क्योंकि यह पवित्र आत्मा के प्रकट करने वाले कार्य के द्वारा संभव होता है। पवित्र आत्मा ही सब बातों को परखने के लिए पहचान और प्रकाशन प्रदान करता है।

एक शारीरिक मनुष्य आत्मिक मनुष्य का न्याय करने के योग्य नहीं होता। वे दो भिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे होते हैं और दो भिन्न साधनों के द्वारा संचालित होते हैं। शारीरिक मनुष्य अपनी इन्द्रियों के

अधीन होता है, अर्थात् वह इन्द्रिय-प्रधान होता है। आत्मिक मनुष्य आत्मा के द्वारा मार्गदर्शित होता है। इसलिए शारीरिक मनुष्य आत्मिक मनुष्य का सही न्याय नहीं कर सकता।

- **वचन 16:**

"क्योंकि <u>प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखाए?"</u> परन्तु हम में मसीह का मन है।

पौलुस यहाँ यशायाह 40:13 का संदर्भ देता है: *"किसने यहोवा के आत्मा को मार्ग बताया या उसका मन्त्री होकर उसको ज्ञान सिखाया है?"* परमेश्वर के मार्ग और उसके विचार मनुष्य से कहीं ऊँचे हैं। परन्तु हमारे लिए, विश्वासियों के रूप में, क्योंकि परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमें दिया गया है, पौलुस यह दृढ़ता से कहता है कि हमारे पास मसीह का मन है! हमें परमेश्वर के मन—अर्थात् उसके विचारों, उद्देश्यों और अभिप्रायों—तक पहुँच प्राप्त है, उसके पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हम में वास करता है।

यह कितना बड़ा विशेषाधिकार है! फिर भी, हमें "शारीरिक मनुष्य" से "आत्मिक मनुष्य" बनने की प्रक्रिया में बढ़ना सीखना चाहिए। अर्थात् हमें इन्द्रियों के अधीन नहीं, बल्कि आत्मा के द्वारा संचालित होना चाहिए।

<u>अध्याय तीन</u>

अब पौलुस उस पहले मुद्दे की ओर ध्यान देता है, जिसे उसने कुरिन्थ की कलीसिया में संबोधित किया था—वह है विभाजन। वह बताता है कि स्थानीय कलीसिया में विभाजन: (A) अपरिपक्वता और शारीरिकता का चिन्ह है; (B) विभाजन नहीं होने चाहिए, क्योंकि हम परमेश्वर के साथ और एक-दूसरे के साथ सहकर्मी हैं; (C) हमें इस बात में सावधान रहना चाहिए कि हम कैसे और किन सामग्री से निर्माण करते हैं—यह संकेत देता है कि शारीरिक कार्य लकड़ी, घास और भूसे के समान हैं; (D) विभाजन, डाह और झगड़ा परमेश्वर के मंदिर, अर्थात् स्थानीय कलीसिया को अशुद्ध करते हैं।

अध्ययन की सुविधा के लिए हम इस अध्याय को चार भागों में विभाजित करते हैं:
आत्मिक बनाम शारीरिक विश्वासी (3:1-4)
परमेश्वर और एक-दूसरे के साथ सहकर्मी (3:5-10)
सही सामग्री से निर्माण करना (3:11-15)
डाह, झगड़ा और विभाजन परमेश्वर के मंदिर को अशुद्ध करते हैं (3:16-23)

आत्मिक बनाम शारीरिक विश्वासी (3:1-4)

1 हे भाइयो, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से, परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं।
2 मैं ने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको नहीं खा सकते थे; वरन् अब तक भी नहीं खा सकते हो,
3 क्योंकि अब तक शारीरिक हो। इसलिये कि जब तुम में डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और क्या मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?
4 क्योंकि जब एक कहता है, "मैं पौलुस का हूँ," और दूसरा, "मैं अपुल्लोस का हूँ," तो क्या तुम मनुष्य नहीं?

पौलुस ने यह उल्लेख किया था कि हम परमेश्वर की बुद्धि उन लोगों से कहते हैं जो परिपक्व और आत्मिक हैं। अब पौलुस कुरिन्थ के विश्वासियों को शारीरिक (शरीर या इन्द्रियों के अधीन) और मसीह में अपरिपक्व (बालक) कहता है। इसलिए उसे उन्हें दूध देना पड़ा—अर्थात् मसीही विश्वास की मूल बातें।

उनकी अपरिपक्वता और शारीरिकता का कारण "डाह, झगड़ा और विभाजन" था, जो इस बात से उत्पन्न हुआ कि लोग अलग-अलग सेवकों के पक्ष में हो रहे थे—"मैं पौलुस का हूँ" और "मैं अपुल्लोस का हूँ।" इसके परिणामस्वरूप वे सच्चे आत्मिक (आत्मा की सामर्थ्य से संचालित) लोगों की तरह नहीं, बल्कि साधारण मनुष्यों की तरह व्यवहार कर रहे थे।

विश्वासियों के रूप में, यद्यपि हमारे भीतर परमेश्वर का आत्मा वास करता है और परमेश्वर ने हमें मसीह में अपनी सारी अद्भुत आशीषों से आशीषित किया है, फिर भी यदि हम अपने दैनिक जीवन को डाह, ईर्ष्या और झगड़े (या अन्य शारीरिक कामों) के अनुसार जीते हैं, तो हम अपनी अपरिपक्वता और शारीरिकता के कारण स्वयं को सीमित कर लेते हैं। हम "साधारण मनुष्यों की तरह व्यवहार" कर रहे होते हैं, जबकि हमें मसीह में नई सृष्टि के लोगों के रूप में जीवन जीना चाहिए।

परमेश्वर और एक-दूसरे के साथ सहकर्मी (3:5-10)

5 अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या है? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुम ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया।
6 मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।
7 इसलिये न तो लगानेवाला कुछ है और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर ही सब कुछ है जो बढ़ानेवाला है।
8 लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं; परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा।
9 क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।
10 परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया, मैं ने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।

विश्वासियों का परमेश्वर के सेवकों के प्रति दृष्टिकोण और उनसे तथा आपस में संबंध बहुत महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार, हम जो परमेश्वर के सेवक हैं, एक-दूसरे को कैसे देखते हैं और एक-दूसरे से कैसे संबंध रखते हैं, यह भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रेरित पौलुस यहाँ कई बातों को स्पष्ट करता है:

- हम सब परमेश्वर के सेवक हैं, और प्रभु ने हम में से प्रत्येक को हमारा कार्य सौंपा है।
- कुछ लोग बीज बोते हैं, कुछ लोग सींचते हैं, परन्तु सारी बढ़ोतरी, वृद्धि और फल परमेश्वर से आते हैं।
- इसलिए हम न तो बोनेवाले को महिमा देते हैं और न सींचनेवाले को। हम परमेश्वर की महिमा करते हैं, जो बढ़ोतरी देते हैं।
- सेवकों के रूप में हम एक हैं—हम इस कार्य में साथ-साथ हैं।
- हर सेवक को उसके कार्य के अनुसार स्वामी की ओर से उसका प्रतिफल मिलेगा।
- हम सब परमेश्वर के सहकर्मी हैं। हम परमेश्वर के साथ और एक-दूसरे के साथ सहकर्मी हैं।
- परमेश्वर के लोग वह खेत हैं जिसे वह सींचना और पोषित करना चाहता है। परमेश्वर के लोग उसकी वह रचना हैं जिसे वह खड़ा कर रहा है। इसलिए सच्ची सेवकाई का उद्देश्य परमेश्वर के लोगों को पोषित करना और बनाना है।

एक अतिरिक्त टिप्पणी के रूप में, यह रोचक है कि प्रभु यीशु ने यूहन्ना 4:35-38 में इसी प्रकार की भाषा का प्रयोग किया।

परमेश्वर के सेवकों के रूप में हमारा हृदय इस बात पर स्थिर होना चाहिए कि हम परमेश्वर के लोगों को पोषित करें और उन्हें निर्माण करें। हम अपने आप को सहकर्मी के रूप में देखते हैं, जो एक

ही उद्देश्य की ओर मिलकर कार्य कर रहे हैं। तब यह प्रश्न नहीं रह जाता कि किसे अधिक प्रतिष्ठा मिले या कौन अधिक महत्वपूर्ण है। हमारे बीच से प्रतिस्पर्धा और झगड़ा समाप्त हो जाते हैं।

हर एक के जीवन में अनुग्रह बाँटा गया है। कुछ लोग अधिक अनुग्रह के लिए आगे बढ़ते हैं और अपने जीवन के द्वारा बहुत अधिक कार्य होते हुए देखते हैं। प्रेरित पौलुस यह मानता है कि उसे एक "बुद्धिमान राजमिस्त्री" (मुख्य वास्तुकार) होने का अनुग्रह दिया गया है। इसलिए वह परमेश्वर के कार्यों के लिए नींव डालता है। यह उसकी अग्रदूत सेवकाई को दर्शाता है, जिसके द्वारा उसने अनेक फलती-फूलती स्थानीय कलीसियाओं की नींव रखी।

परमेश्वर ने दूसरों को इस नींव पर निर्माण करने के लिए नियुक्त किया है। जो लोग निर्माण करते हैं, उन्हें सावधान रहना चाहिए कि वे कैसे और किस सामग्री से इस नींव पर निर्माण करते हैं।

सही सामग्री से निर्माण करना (3:11-15)

11 क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता।
12 यदि कोई इस नींव पर सोना या चाँदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे,
13 तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है।
14 जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा।
15 यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते-जलते।

परमेश्वर के राज्य में होने वाले हर कार्य के लिए केवल एक ही नींव है। वह नींव स्वयं प्रभु यीशु मसीह है।

परन्तु जब हम में से प्रत्येक जन लोगों के साथ कार्य करता है, उन्हें बनाता और पोषित करता है, तब हमें इस बात में सावधान रहना चाहिए कि हम यह कार्य कैसे करते हैं।

यदि हम शारीरिक, देहिक बातों के द्वारा निर्माण करते हैं (1 कुरिन्थियों 3:3), अर्थात् यदि हम डाह, झगड़े, ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा आदि से प्रेरित होकर कार्य करते हैं (शरीर के काम—गलातियों 5:19-21), तो हम काठ, घास और फूस से निर्माण कर रहे होते हैं। ऐसी बातें परमेश्वर की आग की परीक्षा में स्थिर नहीं रहेंगी। वे जल जाएँगी।

परन्तु जब हम आत्मा के द्वारा निर्माण करते हैं, तब हम अनन्त बातों से, अर्थात् परमेश्वर की बातों से—सोना, चाँदी और बहुमूल्य पत्थरों से—निर्माण करते हैं, जो परीक्षा में स्थिर रहेंगी। तब हम अपना प्रतिफल पाएँगे।

पौलुस यह आश्वासन देता है कि यदि हमारे काम जल भी जाएँ, तो भी हम बच जाएंगे, परन्तु हमें कोई प्रतिफल नहीं मिलेगा।

डाह, झगड़ा और विभाजन परमेश्वर के मंदिर को अशुद्ध करते हैं (3:16-23)

16 क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?
17 यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करेगा तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।

[18] **कोई अपने आप को धोखा न दे। यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आप को ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने कि ज्ञानी हो जाए।**
[19] **क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है, "वह ज्ञानियों को उनकी चतुराई में फँसा देता है,"**
[20] **और फिर, "प्रभु ज्ञानियों के विचारों को जानता है कि वे व्यर्थ हैं।"**
[21] **इसलिये मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है:**
[22] **क्या पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा, क्या जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है,**
[23] **और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है।**

यद्यपि वचन 16 को अक्सर किसी एक व्यक्ति पर लागू करके उद्धृत किया जाता है (और वह व्यक्तिगत रूप से भी सत्य है), परन्तु जिस संदर्भ में यह मूल रूप से लिखा गया था, वह स्थानीय कलीसिया से संबंधित है। विश्वासियों का स्थानीय समुदाय परमेश्वर का मंदिर है, और परमेश्वर हम में और हमारे बीच वास करता है।

हमें डाह, झगड़े और विभाजन के द्वारा, अर्थात् एक सेवक के पक्ष में दूसरे सेवक के विरोध में खड़े होकर, परमेश्वर के मंदिर को अशुद्ध नहीं करना चाहिए।

- **वचन 18:**

"कोई अपने आप को धोखा न दे..."
यदि कोई इस सत्य को नहीं मानता, तो वह स्वयं को धोखा दे रहा है।

1 कुरिन्थियों 3:19 में पौलुस अय्यूब 5:13 से उद्धरण देता है।
1 कुरिन्थियों 3:20 में पौलुस भजन संहिता 94:11 से उद्धरण देता है।

- **वचन 21:**

इसलिये मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है:

हम अपना मूल्य और पहचान किसी भी परमेश्वर के जन (पुरुष या स्त्री) से प्राप्त नहीं करते। सब बातें (यहाँ संदर्भ में—सब लोग, सब सेवक) परमेश्वर की ओर से हमें दी गई हैं, और हम मसीह के हैं, और मसीह परमेश्वर के हैं। इसलिए अंततः हमें सब कुछ उसी से और उसी के लिए आता हुआ देखना चाहिए। महिमा केवल उसी को मिलनी चाहिए।

इस प्रकार इस अध्याय में हम स्थानीय कलीसिया में विभाजन का समाधान देखते हैं:
(A) शारीरिक होने के बजाय आत्मिक बनना (3:1-4)
(B) परमेश्वर के साथ और एक-दूसरे के साथ सहकर्मी होना सीखना (3:5-10)
(C) सही सामग्री से निर्माण करने का चुनाव करना (3:11-15)
(D) यह समझना कि डाह, झगड़ा और विभाजन परमेश्वर के मंदिर को अशुद्ध करते हैं (3:16-23), और इसलिए इन्हें दूर रखना। मनुष्य पर घमण्ड न करना।

यदि हम इन चार आत्मिक सत्यों को समझ लें, तो हम सचमुच एक मन और एक हृदय के लोग बन सकते हैं।

लाइफ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार, 08 सितम्बर 2019
1 कुरिन्थियों अध्याय 2 और 3

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी
लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत
लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें
निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: *1 कुरिन्थियों अध्याय 2 और 3*

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें
कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1) *हमारे प्रचार और शिक्षण में मानवीय बुद्धि के बजाय आत्मा की सामर्थ्य और उसके प्रकट कार्यों पर निर्भर होना क्यों महत्वपूर्ण है?*

2) *इस अध्याय में पौलुस द्वारा प्रस्तुत पवित्र आत्मा के कार्य के तीन पहलुओं की जाँच करें, और देखें कि आप अपने दैनिक परमेश्वर के साथ चलने में इनका उपयोग कैसे कर सकते हैं:*
   आत्मा परमेश्वर की बुद्धि को प्रकट करता है (2:6-10)
   आत्मा हमें वह सब प्रकट करता है जो परमेश्वर ने हमें दिया है (2:11,12)
   आत्मा हमें मसीह की बुद्धि प्रदान करता है (2:13-16)

3) *अध्याय 3 में, पौलुस स्थानीय कलीसिया में विभाजन के मुद्दे को संबोधित करता है। जाँच करें कि पौलुस द्वारा प्रस्तुत चारों अंतर्दृष्टियाँ स्थानीय कलीसिया में विभाजन के कारणों को कैसे संबोधित और हल करती हैं:*
(A) शारीरिक होने के बजाय आत्मिक बनना (3:1-4)
(B) परमेश्वर के साथ और एक-दूसरे के साथ सहकर्मी होना सीखना (3:5-10)
(C) सही सामग्री से निर्माण करने का चुनाव करना (3:11-15)
(D) यह समझना कि डाह, झगड़ा और विभाजन परमेश्वर के मंदिर को अशुद्ध करते हैं (3:16-23)?

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:
1) *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2) *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3) *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/english
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org